# रा0 मध्य विद्यालय जैतिया

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

## संक्षिप्त परिचय

- नाम:- रा0 मध्य विद्यालय जैतिया
- अवस्थिति:- वार्ड सं0- 16, नूनिया टोली जैतिया
- पंचायत:- जैतिया
- प्रखण्ड:- चनपटिया
- जिला:- प0 चम्पारण
- कक्षायें:-
  - प्रारम्भिक खंड- 1 से 8
- कार्यरत शिक्षक:-
  - शिक्षिका:- 05
  - शिक्षक:- 08
- प्रधानाध्यापक का नाम :- गोविन्द प्रसाद

विद्यालय में वर्तमान प्रधानाध्यापक का पदस्थापन:- जुलाई' 2017

मैं जुलाई'2017 में इस विद्यालय में आया। मध्य विद्यालय जैतिया प0 चम्पारण जिले के चनपटिया प्रखण्ड में अवस्थित है। प्रखण्ड मुख्यालय से लगभग 3 कि0मि0 दूर यह विद्यालय उस सड़क के किनारे अवस्थित है जो सड़क राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कि कर्मस्थली बृंदावन आश्रम की पावन धरती तक जाती है जो यहाँ से महज दस कि0मि0 की दूरी पर है। मै जब इस विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रूप में आया, उस समय विद्यालय की भौतिक और अकादमिक स्थिति संतोषजनक नहीं थी। विद्यालयीय वातावरण को दुरुस्त करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य की तरह था। अपने वरीय शिक्षकों तथा बिहार शिक्षा परियोजना के प्रशिक्षणों आदि से समस्याओं को चुनौतियों की तरह स्वीकार करने की प्रेरणा मिलती रही है जिसके कारण मैंने इस विद्यालय की समस्याओं को भी चुनौती के रूप में स्वीकार किया और विद्यालयीय वातावरण के सुधार की दिशा मे कार्य करना शुरू किया । मेरे पदस्थापन से पूर्व विद्यालय की जो स्थिति थी उसके बारे मे कुछ अंकनीय विंदु निम्नांकित है:-

भौतिक स्थिति से संबन्धित

1. विद्यालय में पीतल की घंटी, डस्टबिन, घड़ी, शिक्षक विवरणी पोस्टर, खेल-सामग्री, आदि का नितांत अभाव था।
2. पेय जल-स्रोत के रूप में सिर्फ 2 हैंड पम्प थे। मध्याह्न भोजन के संचालन के समय बच्चों की भीड़ हमेशा किसी अनहोनी के संकेत देती थी।
3. विद्यालय में सिर्फ 1 यूनिट शौचालय functional था। एक शौचालय भवन जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे था जिसमे dump हो गए 2 शौचालय यूनिट जो क्रियाशील नहीं थे।
4. विद्यालय परिसर क्षेत्र मुख्य सड़क से इतना नीचे था कि थोड़ी सी बारिश के बाद ही जलमग्न हो जाया करता था जिससे न सिर्फ बच्चों के लिए जोखिम भरी स्थिति पैदा हो जाती थी बल्कि पठन-पाठन भी प्रभावित होता था।
5. विद्यालय चाहरदीवारी विहीन था जिसमें ग्रामीणों ने विद्यालय-परिसर से होकर चार-चार आम रास्ते बना लिये थे जिससे विद्यालयीय शैक्षिक वातावरण कुप्रभावित होता था।
6. स्पष्ट दैनिक-तालिका (Routine) का अभाव था एवं शिक्षक उपलब्धतानुसार किसी भी कक्षा में अनियमित अवधि के लिए जाते थे।
7. मैंने या भी देखा कि बड़ी मात्रा में टूटे हुये उपस्कर (बेंच-डेस्क) अप्रयुक्त अवस्था में रखे हुए थे। उनकी मरम्मती के प्रयास की जरूरत थी।

8. दो कमरे जो उपयोग की दृष्टि से अच्छे नहीं थे और रख-रखाव के अभाव में अप्रयुक्त थे।

9. विद्युत-व्यवस्था उपलब्ध थी किन्तु किसी भी वर्ग कक्ष मे पंखा-बल्ब आदि उपलब्ध नहीं था।

10. विद्यालय भवन एवं कक्षा-कक्ष की सफाई एवं रंग-रोगन, बाला पेंटिंग इत्यादि का अभाव था।

**पूर्व की अकादमिक स्थिति का विवरण**

**1.** स्पष्ट दैनिक-तालिका(Routine) के अभाव में कक्षा-संचालन की स्थिति संतोषजनक नहीं थी।

**2.** जीवंत चेतना-सत्र का अभाव

3. अधिकांश बच्चों के पास पाठ्य-पुस्तके एवं गणवेश अनुपलब्ध

4. शुरुआती कक्षाओं में शिक्षण-अधिगम-सामग्री एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का अभाव

5. बच्चों की प्रगति के मूल्यांकन की कोई निश्चित प्रक्रिया या अवधारणा का अभाव था। यथा सतत व्यापक मूल्यांकन हेतु विभागीय निदेशानुसार मूल्यांन हस्तक का प्रयोग नहीं।

6. विभागीय निदेशानुसार शैक्षिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए base line test के आधार पर समूह-निर्धारण एवं समूह-शिक्षण का अभाव था।

7. विभाग द्वारा बच्चों की प्रतभा खोज एवं तदनुसार उन्हे इससे लाभान्वित करने की दिशा में कोई संतोषजनक प्रयास का अभाव भी मुझे दिखा। विगत कई वर्षों में सिर्फ एक छात्र का मेधा-सह-आय छात्रवृति के लिए चयन हुआ था।

8. सह शैक्षिक गतिविधियों यथा खेल-कूद,सांस्कृतिक,विज्ञान,क्विज-स्पर्धाओं में छात्र-छात्राओ की समुचित भागीदारी एवं उपलब्धि का अभाव था।

9. विद्यालय में बड़ी संख्या में नामांकन (लगभग 750) था किन्तु अधिकांश बच्चों के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं थी कि वे कहाँ हैं फलतः वास्तविक दैनिक उपस्थिति बहुत कम (लगभग 200-250) रहती थी।

इस विद्यालय में आने के बाद शिक्षको और विद्यालय शिक्षा समिति के तत्कालीन अध्यक्ष,सचिव एवं स्थानीय मुखिया से सतत संपर्क करना तथा उनको प्रेरित करना शुरू किया क्योकि बिना इनके सहयोग के समस्याओं से निजात पाना कतई संभव नहीं था। फिर मैंने धीरे-धीरे बदलाव की दिशा में प्रयास करना शुरू किया। एक प्रधानाध्यापक के रूप में मेरे द्वारा किए गए कुछ प्रयास निम्नांकित हैं:-

**भौतिक सुधार हेतु प्रयास**

1. सबसे पहले मैंने विद्यालय समग्र अनुदान के सदुपयोग से पीतल की घंटी, प्रत्येक वर्ग-कक्ष हेतु डस्टबिन, घड़ी, शिक्षक विवरणी पोस्टर, पर्याप्त मात्रा में खेल-सामग्री,आदि की व्यवस्था की ताकि एक सकारात्मक स्कूली परिवेश का निर्माण हो सके।

2. उदास से दिखने वाले विद्यालय भवन को स्वच्छ एवं आकर्षक छवि देने की दृष्टि से मैंने विद्यालय भवन के प्रत्येक भवन खंड एवं कक्षा-कक्ष का रंग-रोगन कराया एवं बच्चों को विद्यालय आकर्षक लगे इसके लिए बाला पेंटिंग कराने का प्रयास किया। इसके अतिरिक्त बड़े एवं चमकीले रंग से विद्यालय के नाम का अंकन एवं कक्षाओं में शैक्षिक एवं अभिप्रेरणात्मक सदुक्तियों का लेखन भी कराया।

**विद्यालय एवं परिसर**

3. बच्चों की संख्या में वृद्धि को देखते हुये मैंने माननीय मुखिया से प्रार्थना की और उनके सहयोग से जल-स्रोत के रूप मे 2 अतिरिक्त हैंड पंप की व्यवस्था की। जलापूर्ति हेतु 2 water tank का अधिस्ठापन भी किया. इतना ही नहीं अलग-अलग दो हैंड वाश- स्टेशन का निर्माण कराया। एक हैंड वाश स्टेशन में 10 तथा दूसरे में 6 नलों की व्यवस्था की गई। दोनों स्टेशनों का टाइलीकरण कराया गया तथा उनके नीचे फर्श का पक्कीकरण जिससे जल प्रवाह की स्थिति में कीचड़ आदि से बचा जा सके।

4. पूर्व से जीर्ण-शीर्ण अवस्था तथा dump एवं अप्रयुक्त शौचालय का जीर्णोद्धार एवं उसमे दो यूनिट तथा दो urinal की व्यवस्था कर मुख्य दरवाजे पर grill-gate की व्यवस्था की गई जो अब पूरी तरह functional है और वर्तमान में बालक शौचालय के रूप में व्यवहृत है।

5. बालिकाओं के लिए एक अतिरिक्त पूरी तरह से टाइलीकृत 2 unit वाले शौचालय भवन का निर्माण तथा बालिकाओ के लिए urinal तथा दोनों शौचालयों में running water की व्यवस्था की।

HAND WASH STATION

BOYS' URINAL

GIRLS' URINAL

6. थोड़ी सी बारिश के फलस्वरूप ही विद्यालय परिसर में होने वाले जलजमाव एवं आए दिन बच्चों को होने वाली परेशानियों से बचाव के लिए 55 ट्रेलर मिट्टी की भराई कर परिसर का उंचीकरण कराया।

7. विद्यालय के चाहरदीवारी विहीन होने के कारण ग्रामीणों द्वारा 4-4 जगह से बनाए गए आम रास्ते के दुष्प्रभाव से बचाने हेतु दो विद्यालय भवन-खंडों के बीच पक्की दीवारों का निर्माण कर रास्तों को बंद किया गया। साथ ही चाहरदीवारी हेतु लगभग साढ़े तीन वर्षों के प्रयास के पश्चात विद्यालय में माननीय मुखिया के माध्यम से चाहरदीवारी निर्माणाधीन एवं कार्य प्रगति पर है।

8. विद्यालय भवन के प्रथम तल्ले पर जाने के लिए सीढ़ियों के प्रवेश द्वार के खुला होने के कारण विद्यालय अवधि के बाद अवांछित लोगों के आने जाने को रोकने एवं आए दिन होने वाली क्षति से बचाव हेतु सीढ़ी के प्रवेश द्वारों पर आयरन गेट की व्यवस्था की गई।

आयरन गेट की व्यवस्था

9. बड़ी मात्रा  में पूर्व से टूटे उपस्करों की हर वर्ष मरम्मती कर बच्चो के  बैठने की यथासंभव व्यवस्था की गई। शिक्षकों एवं आगंतुकों के उपयोग की दृष्टि से पर्याप्त मात्रा  में उपस्कर यथा कुर्सी-टेबल आदि की अतिरिक्त  व्यवस्था के साथ ही रखरखाव के अभाव के कारण दो अतिरिक्त किन्तु अव्यवहृत कक्षों में से एक का रंग रोगन कर वर्ग-कक्ष संचालित किया गया।

अकादमिक सुधार हेतु प्रयास

1. शिक्षकों से सुझाव प्राप्त कर प्रत्येक वर्ग–कक्ष में दैनिक शिक्षण-तालिका के फ्लेक्सो की उपलब्धता सुनिश्चित किया एवं प्रधानाध्यापक सह शिक्षक प्रकोष्ठ में बड़े आकार के फ्लेक्सो में शिक्षण-तालिका एवं तदनुसार शिक्षण की सुनिश्चितता के प्रयास

- 2. विद्यालय की शुरुआत अच्छी हो तो पुए दिन का संचालन भी अच्छा होता है। इस दृष्टिकोण से चेतना-सत्र को आकर्षक बनाने हेतु मैंने नवाचारी नवाचारी प्रयास किया जैसे; बड़े आकार के DJ स्पीकर एवं cordless mic का उपयोग कर प्रतिदिन चेतना-सत्र का संचालन
- बच्चों मे अभिव्यक्ति कौशल को बढ़ावा देने की दृष्टि से वर्गध्यापकों की देख-रेख में प्रतिदिन अलग-अलग वर्गों के बच्चो से गीत, चुटकुला,कविता,समाचार-वाचन,सामान्य-ज्ञान प्रश्नोत्तरी का प्रदर्शन
- सप्ताह में एक दिन प्रदेश के दूसरे जिलों के विशेषज्ञ शिक्षकों से बच्चो का सीधा संवाद स्थापित कर उक्त जिले की विशेषताओं से बच्चो को अवगत कराना

**एक नवाचार के तहत चेतना सत्र में दूसरे जिले के शिक्षक से संवाद करते बच्चे**

3. मैंने यह कोशिश की कि निपुण भारत अंतर्गत FLN के प्रावधानों की सुनिश्चितता के लिए शुरुआती कक्षाओं यथा 1-3 तक गतिविधि आधारित शिक्षण हो। इसके लिए कक्षा-1 और 2 में शिक्षिकाओं को यह दायित्व देकर गतिविधि आधारित शिक्षण को सुनिश्चित किया।

4.बच्चों की प्रगति का सतत मूल्यांकन हो इसके लिए मैंने विभागीय निदेशानुसार जून एवं दिसंबर को छोडकर प्रत्येक माह मूल्यांकन-हस्तक के उपयोग से मासिक मूल्यांकन की प्रक्रिया को अनिवार्य कराया।

5. कई कारणों से बच्चे शैक्षिक रूप से पिछड़ जाते है अतएव उनके अधिगम ह्रास की प्रतिपूर्ति हेतु निदेशानुसार base line test के आधार पर कक्षा 3,4&5 के बच्चों को समूह A,B&C में वर्गीकृत कर भाषा एवं गणित के लिए समूह-शिक्षण की व्यवस्था की।

6. विद्यालय के बच्चों में प्रतियोगी प्रवृति जागे इसके लिए प्रति वर्ष कक्षा 8 के बच्चों को प्रेरित कर SCERT संचालित आय सह मेधा परीक्षा हेतु form filling एवं परीक्षा-केंद्र तक बच्चों की उपस्थिति सुनिश्चित कराया।

चयनित उपलब्धि:- ( सत्र 2018-19 – 3 छात्र), (सत्र 2019-20 – 4 छात्र) , (सत्र 2020-21–4 छात्र) सत्र 2021-22 के लिए आवेदित छात्रों की संख्या-15

7. INSPIRE AWARD योजना अंतर्गत प्रत्येक वर्ष विज्ञान-शिक्षक के सहयोग से प्रोजेक्ट-निर्माण हेतु बच्चों को प्रेरित किया। कोरोना काल से पहले एक छात्र "लवकुश" के प्रोजेक्ट का चयन भी हुआ जिससे अन्य छात्रों में भी प्रोजेक्ट निर्माण हेतु उत्सुकता जागी।परिणामतः अब प्रति वर्ष बच्चे स्वतः प्रोजेक्ट निर्माण कर रहे है। इस वर्ष 5 बच्चों के project submission में 1 का प्रोजेक्ट का चयन भी हुआ।

INSPIRE AWARD में चयनित

बच्चा अपने प्रोजेक्ट के साथ

8. ऊपर की कक्षाओं के लिए TV युक्त e-content आधारित एवं facebook live के माध्यम से विषय-विनिमयन की व्यवस्था की जिससे विषय-शिक्षक के अभाव में भी बच्चों की पढ़ाई बाधित नहीं होती है।

9. मैंने नेतृत्व क्षमता की दृष्टि से बाल-संसद एवं मीना मंच की नियमित गोष्टी एवं अधिकृत नोडल शिक्षक/शिक्षिका के माध्यम से आवश्यक गतिविधियों का क्रियान्वयन को सुनिश्चित किया। बाल-संसद एवं मीना मंच के सदस्यों को विद्यालय स्वच्छता यथा; परिसर की सफाई, शौचालय का उचित उपयोग आदि के लिए प्रेरित करने एवं क्रियानवायान सुनिश्चित करने पर फोकस किया।

10. बच्चो में लेखन एवं सृजनात्मकता विकास की दृष्टि से no cost बाल-अखबार उनके स्वयं के प्रयास से निर्मित कराने एवं उसका प्रदर्शन करना भी मैंने सुनिश्चित किया। जिसके कारण आज बच्चों में अपनी रचना अखबार मे शामिल करने की होड लगती है। no cost बाल-अखबार निर्माण का नवाचारी प्रयास

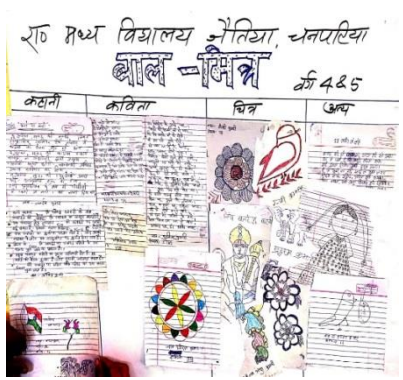

**बच्चों मे सृजन-क्षमता विकास हेतु रचनाओं पर आधारित बाल अखबार में अपनी रचना लगाते बच्चे**

11. निदेशानुसार अभिभावक गोष्ठियों का आयोजन एवं विद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों, बच्चों की उपलब्धि पर बात-चीत एवं अभिभावकों के सुझाव-आमंत्रण की व्यवस्था नियमित की।

अभिभावक गोस्ठी को संबोधित करते प्रखण्ड शिक्षा पदा0

अभिभावक गोस्ठी आयोजन हेतु बात-चीत करते राज्य स्तरीय पदा0

मनोरंजक एवं FINE MOTOR SKILL विकास के लिए गतिविधि में शामिल बच्चे

जिला स्तरीय रोल-प्ले प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद श्री कृष्ण विज्ञान केंद्र पटना में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेते बच्चे।

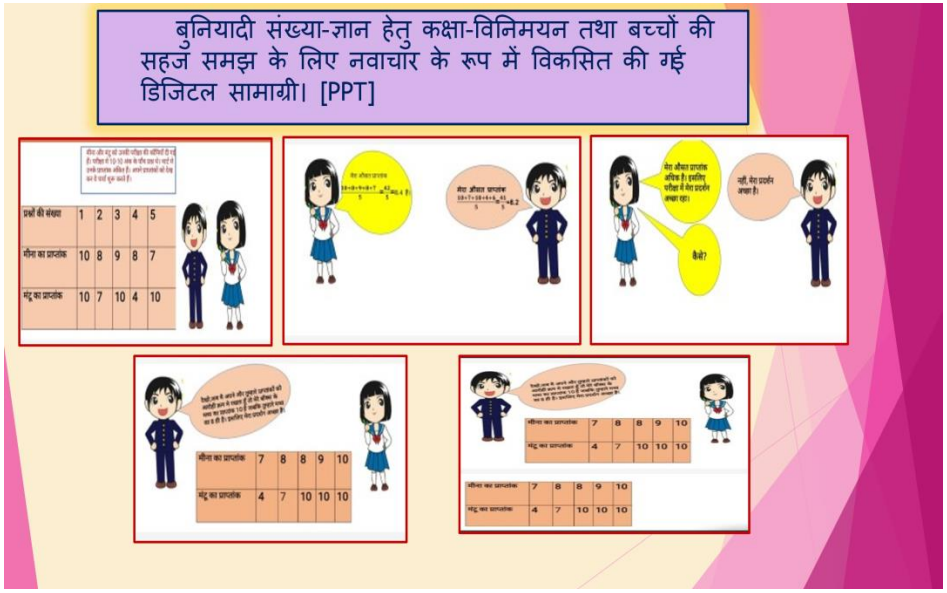

12. मैंने विद्यालय में आने के बाद एक नवाचारी शिक्षण तकनीक की शुरुआत की जिसके तहत मैंने विद्यालय में 55" android TV का अधिष्ठापन कर राज्य के अलग-अलग जिलों के परिचित राज्य-स्तरीय विषय विशेषज्ञ शिक्षकों के माध्यम से विषय शिक्षण की व्यवस्था की और अब LIVE TV के माध्यम से उनके द्वारा बच्चों को विषय ज्ञान दिया जाता है।

ICT आधारित एक नवाचारी प्रयोग जिसमे दूर के विशेषज्ञ शिक्षक video call की सहायता एवं TV के माध्यम से विषय ज्ञान-विनिमयित करते है। प्रस्तुत फोटो में गया के एक विद्यालय से विशेषज्ञ शिक्षक बच्चों से गणित विषय पर चर्चा करते हुये।

**सुरक्षित शनिवार ' कार्यक्रम के तहत आपदा से बचाव का mock drill करते बच्चे।**

13. मेरे आने से पूर्व विद्यालय में खेल प्रतियोगिताओं से बच्चे लगभग अनभिज्ञ से थे किन्तु मैंने यह प्रयास किया की बच्चे खेलों में आगे आयें। मैंने खेल सामाग्री की व्यवस्था की और नियमित रूप से बच्चों को खेलों का अभ्यास कराना शुरू किया। परिणामस्वरूप बच्चों का प्रखण्ड और जिला स्तर पर चयन भी होना शुरू हुआ।

प्रखण्ड स्तरीय प्रतियोगिता मे सफल होने के बाद जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यालय के बच्चे

गोविंद प्रसाद ( प्रधानाध्यापक) रा0 मध्य विद्यालय जैतिया

चनपटिया, प0 चंपारण